हबीबिया स्कूल के उद्घाटन के अवसर पर प्रधानमंत्री का भाषण

28 अगस्त, 2005
काबुल

आज अफगानिस्तान के महामहिम राष्ट्रपति के साथ हबीबिया स्कूल का उद्घाटन करने के लिए इस अद्वितीय अवसर पर उपस्थित होकर मैं अपने को वास्तव में सौभाग्यशाली महसूस कर रहा हूं।

एक शताब्दी से भी अधिक समय पहले हुई इस प्रतिष्ठित स्कूल की स्थापना से लेकर आज तक भारत इस स्कूल के साथ घनिष्टता से जुड़ा रहा है। दरअसल, हबीबिया स्कूल के पहले प्रिंसिपल श्री अब्दुल गनी एक भारतीय थे। हमें इस बात का भी सौभाग्य प्राप्त है कि हमने इस प्रतिष्ठित स्कूल की सेवा के लिए अनेक भारतीय शिक्षक यहां भेजे हैं।

मुझे बताया गया है कि इस स्कूल ने हमेशा से ही शिक्षा के उच्चतम मानकों का पालन किया है। इसके भूतपूर्व छात्रों में राजनैतिक नेता, इंजीनियर, डॉक्टर, राजनयिक, लेखक तथा कवि शामिल हैं जिन्होंने अफगानिस्तान को गौरवान्वित किया है। यहां इतना ही कहना काफी होगा कि आज के नेताओं में बाबा-ए-मिल्लत एच.एम.ज़हीर शाह और राष्ट्रपति हमीद करजई ने भी इसी स्कूल से अपनी शिक्षा पूरी की है। मुझे पूरा विश्वास है कि यह स्कूल अपने अच्छे कार्यों को आगे भी जारी रखेगा और अफगानिस्तान के लिए भविष्य में और भी सम्मानित नेता तैयार करेगा।

25 वर्षों से भी अधिक समय चले संघर्ष के दौरान हबीबिया स्कूल को काफी क्षति उठानी पड़ी है। इस प्रतिष्ठित स्कूल का पुनर्निर्माण करने का मौका देकर अफगानिस्तान की सरकार ने हमें गौरवान्वित किया है। इससे हमें इस अग्रणी शिक्षण संस्था के साथ जुड़ने का अवसर मिला है। हमारा पक्का यकीन है कि मजबूत शिक्षा संस्थाएं खुशहाल समाज और प्रगतिशील राष्ट्र के आधार होते हैं। सही मायनों में ये सभी सभ्य समाजों के प्रामाणिक चिन्ह होते हैं।

महानुभावो, देवियो और सज्जनो,

हबीबिया स्कूल का पुनर्निर्माण करते समय हमने इसे प्रयोगशाला-उपस्कर, कंप्यूटर तथा "Hole-in-the wall" नमूने के जरिए नवीन कंप्यूटर शिक्षण तकनीकें देने का निर्णय लिया। इसी फरवरी में अपनी भारत यात्रा के दौरान राष्ट्रपति करजई ने स्वयं देखा कि किस प्रकार यह कंप्यूटर शिक्षण योजना भारतीय बच्चों में गहन रूचि पैदा कर रही है। हमें आशा है कि हबीबिया के बच्चे भी ज्ञान की सीमाओं को आगे बढ़ाएंगे और अफगानिस्तान को एक मजबूत, खुशहाल और शांतिपूर्ण देश बनाने में अपना योगदान देंगे।

भारत ने हमेशा ही अपनी विकास रणनीति में मानव संसाधनों के विकास पर काफी बल दिया है। आज हमें एक विविधता पूर्ण तथा उन्नत शिक्षण एवं प्रशिक्षण का बुनियादी ढांचा हासिल है। मुझे यह जानकर खुशी हुई है कि अफगानी छात्र शिक्षा तथा व्यावसायिक प्रशिक्षण लेने के लिए भारत को सर्वाधिक पंसदीदा देश मानते हैं। हमें इस बात पर बड़ा गर्व होता है कि अफगानिस्तान के राष्ट्रपति भारत में हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के छात्र रहे हैं।

इस समय, हम अल्प-कालीन व्यावसायिक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों के लिए आई.टी.ई.सी. कार्यक्रम तथा कोलंबो प्लान के तहत लगभग 100 सीटें तथा भारत में विश्वविद्यालयी शिक्षा देने के लिए 14 छात्रवृत्तियाँ देते हैं। हम महसूस करते हैं कि ये संख्या नाकाफ़ी है इसलिए हमने यह फैसला किया है कि अफगानी छात्रों के लिए इस संख्या को बढ़ाकर सालाना 1000 छात्रवृत्तियाँ कर दिया जाए। इसमें विश्वविद्यालयी शिक्षा के लिए 500 छात्रवृत्तियाँ तथा भारतीय तकनीकी सहायता कार्यक्रम के तहत अल्प-कालीन व्यावसायिक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों के लिए 500 छात्रवृत्तियां शामिल होंगी।

आने वाले समय में हमारा यह प्रयास रहेगा कि हम सरकार और अफगानिस्तान के लोगों के पुनर्निर्माण के प्रयासों में अपनी भागीदारी और बढाएं। मुझे पूरा विश्वास है कि इस प्रयास में हबीबिया स्कूल भारत और अफगानिस्तान के बीच स्थायी दोस्ती का प्रतीक होगा।

मैं आपके महान प्रयासों में आपकी पूर्ण सफलता की कामना करता हूं।

बहुत-बहुत धन्यवाद।